सत्य मार्ग की खोज, सीरीज़ - 30

शराब और नशा

एक सामाजिक अभिशाप

जमाअत इस्लामी हिन्द

दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, ओखला, नई दिल्ली-110025

09650022638

www.islamsabkeliye.com

www.facebook.com/islamsabkeliyeofficial

ईश्वर, अति दयावान, अत्यंत कृपाशील के नाम से

शराब और नशा : एक सामाजिक अभिशाप

यह बड़ी अजीब बात है कि दुनिया जैसे-जैसे विकास की ओर बढ़ रही है इसमें नैतिकता का ह्रास होता जा रहा है और बुराइयां बढ़ रही है। उन्हीं में एक बड़ी बुराई नशे की लत है।

नशे की लत वैसे तो सदा रही है, पर आधुनिक समाज में इसका चलन बहुत बढ़ गया है और तेज़ी से बढ़ता ही जा रहा है। अनेक प्रकार के नशे हैं जो इस समय प्रचलित है, जैसे शराब, ड्रग्स, तम्बाकू, गुटका आदि।

एक बार जिसको नशे की लत पड़ गई, वह फ़िर स्वयं को इनका दास बनने से बचा नहीं पाता। नशे के बगैर उसके लिए एक पल व्यतीत करना भी मुश्किल हो जाता है। यह शारीरिक और मानसिक दासता अनेकों समस्याओं को जन्म देती हैं, जो धीरे-धीरे उसके व्यक्तित्व को पूरी तरह खोखला कर देती हैं और वह समाज पर एक बोझ बन जाता है। अनगिनत आर्थिक, अध्यात्मिक और सामाजिक समस्याएँ उसको और उसके परिवार को घेर लेती हैं और इनसे पीछा छुड़ाने का उसके पास कोई रास्ता नहीं होता। शरीर पर इसका जो घातक प्रभाव पड़ता है वह अलग।

शराब

शराब का प्रचलन समाज में सबसे अधिक है। इसका अनुमान चारों ओर गली-कूचों में फैली शराब की दुकानों से लगाया जा सकता है, जिनपर हर समय ग्राहकों की भीड़ लगी रहती है। समाज में शराब पीने वालों का प्रतिशत लगातार बढ़ रहा है। यह एक सर्वमान्य सच है कि शराब सभ्य समाज के लिए एक अभिशाप है। यह सभी बुराइयों की जड़ है। शराब पीने वाले भी इससे अच्छी तरह अवगत हैं, शेरो-शायरी के अलावा कहीं इसे अच्छा नहीं कहा जाता, लेकिन इसके बावजूद हर दौर में इसका प्रचलन रहा है। इतिहास के पन्नों में शराब के कारण पैदा होने वाली समस्याओं की सूची भी मौजूद है, शराब के कारण होने वाले अपराधों और उनकी सज़ाओं का उल्लेख भी और शराब के कारण मिट जाने वाले समुदायों के नाम भी। फिर भी हमने इतिहास से सबक नहीं लिया। न व्यक्तिगत रूप से लोग इसे छोड़ने को तैयार हैं और न ही सरकारें इसे प्रतिबंधित करने की इच्छाशक्ति रखती हैं।

नशे की लत

शुरू में लोग फैशन के तौर पर इसका स्वाद चखते हैं और फिर नशे के जाल में फंसते चले जाते हैं। कुछ लोगों का तर्क होता है कि वे सोशल ड्रिंकर अर्थात कभी-कभी पीने वाले हैं और वे कभी अपने आप पर

कंट्रोल नहीं खोते, जबकि अध्ययन और अनुभव यह बताता है कि शुरू में हर आदमी सोशल ड्रिंकर ही होता है। लेकिन फिर वह अपने आप पर काबू नहीं रख पाता और उसका लती हो जाता है। कोई भी व्यक्ति इस इरादे से शराब पीना शुरू नहीं करता कि वह नशे में मदमस्त होकर इंसानियत से नीचे गिर जाएगा और भलाई और बुराई के बीच का अंतर खो देगा, लेकिन अंततः शराब पीने वालों की बड़ी संख्या यही कुछ करती दिखाई देती है।

शराब पीने वालों की इच्छाशक्ति इतनी क्षीण हो चुकी होती है कि वे उससे पीछा नहीं छुड़ा पाते। ऐसे लोग इस स्थिति के लिए शराब को ही दोषी ठहराते हैं और कहते हैं कि शराब ने उन्हें जकड़ रखा है। जबकि वस्तु स्थिति इसके विपरीत यह है कि खुद उन्होंने शराब को पकड़ा होता है। शराब की जकड़न को स्पष्ट करते हुए किसी महापुरुष ने एक शराबी से कहा था कि यह तो ऐसा ही है कि जैसे तुम लकड़ी के एक खंभे को अपनी बाहों में भर कर शोर मचाओ कि "खंभे ने मुझे जकड़ रखा है", जबकि सच्चाई यह है कि तुमने खंभे को पकड़ा हुआ है। तुम चाहो तो उसे छोड़ सकते हो।

शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव

हम में से अधिकतर लोग शराब के दुष्प्रभावों की समझ रखते हैं। शुरू में तो मानव शरीर इसके दुष्प्रभावों का मुक़ाबला कर लेता है और पीने वालों को आनंद का अनुभव होता है, लेकिन जल्दी ही सहनशक्ति जवाब दे जाती है और शरीर के अंगों पर इसके बुरे प्रभाव बढ़ने लगते हैं। शराब का सबसे बुरा प्रभाव लीवर पर पड़ता है और वह सिकुड़ जाता है। किडनी पर अतिरिक्त बोझ पड़ने से वे काम करना बंद कर देती हैं। शराब के सेवन से मस्तिष्क में सूजन आ जाती है, तंत्रिकाएं कमजोर पड़ जाती है और हड्डियां जर्जर हो जाती हैं। शराब शरीर में मौजूद विटामिन के भंडार को नष्ट कर देती है विशेष रुप से विटामिन 'बी' और 'सी' के भंडार को। आमतौर पर लोग शराब के साथ तंबाकू का सेवन भी करते हैं, ऐसे में इससे होने वाले नुकसान कई गुना बढ़ जाते हैं। ब्लड प्रेशर, स्ट्रोक और हर्ट अटैक का ख़तरा पैदा हो जाता है। श्वसन तंत्र बुरी तरह प्रभावित होता है जो कई बार घातक सिद्ध होता है।

नैतिकता का पतन

शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के अलावा शराब के सेवन से मनुष्य का नैतिक अस्तित्व नष्ट होकर रह जाता है। सर्वजगत के रचयिता और पालनहार ने मनुष्य को सर्वोत्तम सृष्टि पर पैदा किया है और सभी जीवों पर श्रेष्ठता देते हुए उसे शारीरिक अस्तित्व के साथ एक नैतिक अस्तित्व भी प्रदान किया है। शराब का सेवन उस नैतिक अस्तित्व को नष्ट करके

उसे पशुता के स्तर पर, बल्कि उससे भी नीचे ले आता है। नशे में मनुष्य सही ग़लत और अच्छे बुरे का अंतर नहीं कर पाता। वह माता-पिता और बड़ों का आदर सम्मान भी भूल जाता है और उनके साथ बदसलूकी और गाली-गलौज करने से भी नहीं चूकता। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि नशे के लती संतान ने अपने बूढ़े माता-पिता को उनके ही घर से निकाल दिया। घरेलू हिंसा की अधिकतर घटनाएं शराब का ही दुष्परिणाम होती हैं। समाज में ऐसे उदाहरण भी भरे पड़े हैं कि पति अपनी कमाई का अधिकतर हिस्सा नशे में उड़ा देता है और बेचारी पत्नी उससे मार भी खाती है और किसी तरह उसके बच्चों का पोषण भी करती है। शराब व्यक्ति के पारिवारिक जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती है। बच्चे न ठीक से पढ़ पाते हैं और न उनका नैतिक और मानसिक विकास हो पाता है। एक व्यक्ति की नशे की लत पूरे परिवार को जीवन के सुख से वंचित कर देती है। आय का एक बड़ा हिस्सा नशे की भेंट चढ़ जाता है और परिवार की बुनियादी ज़रूरतें भी पूरी नहीं हो पाती हैं।

शराब उन्मूलन के प्रयास और उनकी विफलता

सभ्य समाज में शराब से छुटकारा पाने के लिए प्रयास किए जाते रहे हैं, लेकिन वे प्रयास कम ही सफल हुए हैं। प्रशासनिक और सरकारी स्तर पर शराब के दुष्प्रभावों से लोगों को अवगत कराने के लिए अथाह राशि ख़र्च कर के तरह-तरह के विज्ञापन तैयार किए गए और लोगों को विभिन्न तरीक़ों से शराब से बचने के लिए प्रेरित किया गया। शराब को प्रतिबंधित करके इसे बेचने और इसका सेवन करने वालों के लिए सज़ा का प्रावधान भी किया गया। लेकिन इन सब प्रयासों का उल्टा ही प्रभाव देखने को मिला। एक लाइसेंस-युक्त भट्टी बंद की गई तो 10 अवैध भट्टियां खुल गई। एक दुकान को प्रतिबंधित किया गया तो गली-गली में चोरी छुपे शराब बेची और ख़रीदी जाने लगी। पहले तो सरकार मानकों का पालन भी करा लेती थी अब तो शराब बनाने वाले पूरी तरह स्वच्छंद हो गए। परिणाम स्वरूप ऐसी शराब बनने और बिकने लगी जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए और अधिक हानिकारक हो। अवैध जहरीली शराब से लोगों के मरने की खबरें भी आती रहती हैं। प्रतिबंध वाले राज्य में दूसरे राज्यों से अवैध रूप से शराब की तस्करी होने लगी, जिस की आड़ में कई तरह के अपराध भी पनपने लगे।

अमेरिका में जनवरी 1920 से अक्टूबर 1933 तक लगभग 14 वर्षों तक शराब प्रतिबंधित रही। इस दौरान वहां शराब पीने वालों की संख्या में 10 गुना वृद्धि हो गई और इसी अनुपात में घटिया शराब पीकर बीमार पड़ने वालों और मरने वालों की संख्या में भी वृद्धि हुई। अवैध शराब के कारोबार ने वहां हर तरह के अपराध को भी ख़ूब बढ़ावा दिया।

धर्मों की भूमिका

समाज को शराब जैसी बुराइयों से मुक्ति दिलाने में धर्मों और धर्मगुरुओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती थी, क्योंकि धरती पर मनुष्य को मानवता का भूला हुआ सबक़ याद दिलाना ही धर्म का मुख्य उद्देश्य होता है। दुर्भाग्य से आज दुनिया में मौजूद अधिकतर धर्म अपनी मौलिकता खो चुके हैं। मनुष्यों ने ईश्वर द्वारा अवतरित किताबों में हस्तक्षेप कर उन्हें विकृत कर दिया है। उन किताबों में एक ओर तो शराब को वर्जित ठहराया गया है तो दूसरी ओर विशेष अवसरों पर उसके सेवन की अनुमति भी दी गई है। इसके अलावा कई धार्मिक अनुष्ठानों में भी शराब का प्रयोग होता है। यही कारण है कि हमारे धर्मगुरु इसे लेकर कोई स्पष्ट विचारधारा नहीं रखते। यह भी देखा गया है कि शराब की बुराइयां गिनाने वाले गुरुजी नशा किये बिना प्रवचन नहीं देते हैं। धार्मिक आयोजनों में जो 'कथाएं' और वीरगाथाएं सुनाई जाती हैं उनमें भी शराब का उल्लेख एक बुराई के रूप में नहीं होता, बल्कि कई बार तो इसकी प्रशंसा भी की जाती है। इन्हीं कारणों से धार्मिक होने के बावजूद हमारा समाज शराब और दूसरे मादक पदार्थों से सुरक्षित नहीं रह सका।

इस्लाम का दृष्टिकोण

दूसरे सभी धर्मों के विपरीत नशे को लेकर इस्लाम का दृष्टिकोण एकदम स्पष्ट है। वह अपने मानने वालों को किसी हाल में नशा की अनुमति नहीं देता। अल्लाह ने जब अपनी योजनानुसार अरब में अपने अंतिम दूत को खड़ा किया तो उस समय अरब की असभ्य कौम हर तरह के अपराध में डूबी हुई थी। उस समाज में लोग पानी के बिना तो एक-दो दिन रह लेते, लेकिन कुछ लोग ऐसे थे जो शराब के बिना 1 दिन भी नहीं रह सकते थे। फिर जब इस्लाम ने उनका नैतिक प्रशिक्षण कर दिया तो मात्र तीन चरणों में, बल्कि तीन क्रमशः आदेशों में उन्होंने शराब को ऐसे छोड़ा कि फिर कभी हाथ नहीं लगाया। पहले अल्लाह की ओर से कहा गया कि **"शराब और जुए दोनों में बड़ी खराबी है और लोगों के लिए कुछ लाभ भी हैं, मगर इनका नुकसान इन के लाभ से ज्यादा है।"** (कुरआन 2: 219) फिर कुछ समय बाद आदेश हुआ, **"ईमान लाने वालो! नशे की हालत में नमाज के पास न जाओ।"** (कुरआन 4: 43) और अंत में यह कहा गया, **"ऐ ईमान लाने वालो! शराब और जुए से बचे रहो तो तुम्हें कामयाबी मिलेगी। शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिये तुम्हारे बीच फूट और दुश्मनी डाल दे और तुमको अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे। क्या यह मालूम हो जाने के बाद अब तुम इसको छोड़ दोगे। अल्लाह का आज्ञा पालन करो और रसूल की बात मानो और**

जुए और शराब को छोड़ दो, लेकिन अगर तुमने उद्दंडता दिखाई तो जान लो कि हमारे रसूल का काम केवल इतना है कि साफ-साफ पैगाम पहुंचा दे।" (कुरआन 5: 90-92)

इस आदेश का आना था कि शराब के एक जाम के लिए लोगों की जान तक ले लेने वाले अरब के असभ्य लोगों ने एकदम से शराब छोड़ दी। जिसने शराब पीते हुए यह आदेश सुना उसने वहीं पर गिलास तोड़ दिया और मटका उलट दिया। फिर वहां शराब एक बीती कहानी बन कर रह गई।

जवाबदेही का एहसास

अल्लाह के आदेश की ऐसी प्रतिक्रिया इसलिए सामने आई कि लोगों के मन में यह बात बैठ चुकी थी कि दुनिया का जीवन वास्तविक जीवन नहीं है, बल्कि वास्तविक जीवन तक पहुंचने का एक पड़ाव मात्र है। इस जीवन को अगर जीवन देने वाले और पालने वाले की मर्जी के अनुसार गुजार लिया जाए तो मरने के बाद परलोक में अपनी मर्जी से जीने के लिए एक ऐसा जीवन मिलेगा जो कभी खत्म नहीं होगा। इसके विपरीत अगर यहां पालनहार की मर्जी के विरुद्ध अपनी मर्जी चलाने की कोशिश की तो 60-70 वर्ष के दुनिया के जीवन के बाद हमेशा के लिए नरक की यातना में डाल दिया जाएगा। आमतौर पर लोगों के सामने दुनिया का सीमित जीवन ही होता है और क्षणिक आनंद के लिए लोग इस सीमित जीवन का दांव खेलने को तैयार हो जाते हैं। हालांकि सच्चाई यह है कि दुनिया में आने वाली मृत्यु पर जीवन का अंत नहीं होता है, बल्कि वहां से वास्तविक जीवन में प्रवेश मिलता है और उस जीवन का स्वरूप संसार में किये कर्मों से निर्धारित होता है। अगर किसी ने शराब के नशे में अपनी बुद्धि भ्रष्ट करके अपने शरीर पर अत्याचार किया, अपनी पत्नी और बच्चों के अधिकारों का हनन किया, माता-पिता और बड़ों को सम्मान नहीं दिया और अपना पारिवारिक जीवन चौपट कर लिया, पड़ोसियों को परेशानी किया, लोगों से झगड़ कर समाज के बिगाड़ का कारण बना और अपने रचयिता और पालनहार के आदेशों को ठुकरा कर उसे नाराज किया तो इस संसार में अपना सीमित जीवन बिताने के बाद परलोक में वह सज़ा से बच नहीं सकता, उसे सदा के लिए नरक में डाल दिया जाएगा, जहां उस के दुख और उसकी पीड़ा का कभी अंत नहीं होगा। इसके विपरीत जो ईश्वर के आदेशों का सम्मान करते हुए शराब से बचा रहेगा और उसकी आज्ञा का पालन करता रहेगा उसे सदा के लिए स्वर्ग में जगह मिलेगी जहां उसके सुख और आनंद की न कोई सीमा होगी और न कोई अंत होगा।

अधिक जानकारी के लिए हमसे संपर्क करें।
धन्यवाद
dawah.jih@gmail.com